चुकती यमयातना रे।।३।।

पद १६१

(राग: यमन जिल्हा - ताल: धुमाळी)

होउनी। त्यजुनी सकल कल्पना रे।।१।। जातसे दिन दिन व्यर्थिच

वायां। नये नरदेह पुन्हा रे।।२।। माणिक म्हणे मना नामप्रतापें।

(राग: यमन जिल्हा – ताल: धुमाळी)
गायी गायी मना रे हरीचे गुण गायी ।।ध्रु.।। एक्या भावे तत्पर